अध्याय 5: तोप

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर	4 प्रश्न
प्रश्नावली 5.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 5.3	भाषा अध्ययन	2 प्रश्न

प्रश्नावली 5.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1

विरासत में मिली चीजों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

हल

विरासत में मिली चीजें केवल वस्तुएँ नहीं होतीं — वे हमारे इतिहास, संस्कृति और पूर्वजों की स्मृति की प्रतीक होती हैं।

कविता में कंपनी बाग में रखी 1857 की तोप इसी विरासत का प्रतीक है।

यह तोप हमें याद दिलाती है कि ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस प्रकार भारत पर अत्याचार किए और देश के वीर सेनानियों को इसी तोप से मौत के घाट उतारा।

विरासत की चीजें यह सीख देती हैं कि हमारे पूर्वजों ने क्या गलतियाँ कीं और भविष्य में उन्हें कैसे टाला जाए।

इसी कारण इस तोप की 'बड़ी सम्हाल' होती है और साल में दो बार इसे चमकाया जाता है — ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इससे सबक लें।

कविता के अनुसार: 'इसकी होती है बड़ी सम्हाल, विरासत में मिले / कंपनी बाग की तरह।'

उत्तर: विरासत में मिली चीजें हमारे इतिहास और पूर्वजों की स्मृति की प्रतीक होती हैं। कंपनी बाग की यह 1857 की तोप भी ऐसी ही विरासत है जो दासता और संघर्ष की याद दिलाती है और भावी पीढ़ियों को सबक देती है — इसीलिए इसकी बड़ी सँभाल होती है।

प्रश्न 2

इस कविता से आपको तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है?

हल

कविता 'तोप' से निम्नलिखित जानकारियाँ मिलती हैं —

1. यह तोप 1857 की है और कंपनी बाग के मुहाने (प्रवेश द्वार) पर रखी गई है।
2. इसे साल में दो बार चमकाया जाता है, अर्थात् इसकी विशेष देखभाल होती है।
3. अपने जमाने में यह तोप बड़ी शक्तिशाली ('बड़ी जबर') थी और इसने अच्छे-अच्छे वीर सेनानियों (सूरमाओं) के धज्जे उड़ाए थे — यानी उन्हें मौत के घाट उतारा था।
4. अब इस तोप की शक्ति समाप्त हो चुकी है — छोटे-छोटे लड़के इस पर घुड़सवारी करते हैं।

5. चिड़ियाँ (विशेषकर गौरैयें) इस पर बैठकर गपशप करती हैं और कभी-कभी इसके भीतर भी घुस जाती हैं।
6. तोप का मुँह अब बंद है — वह किसी को नुकसान पहुँचाने में असमर्थ है।

उत्तर: कविता से ज्ञात होता है कि यह 1857 की तोप है जो कंपनी बाग के मुहाने पर रखी है, साल में दो बार चमकाई जाती है। अपने जमाने में यह बड़ी भयंकर थी और इसने वीर सेनानियों को मौत के घाट उतारा था। अब छोटे लड़के इस पर सवारी करते हैं और गौरैयें इस पर बैठकर गपशप करती हैं — इसका मुँह बंद हो चुका है।

प्रश्न 3

कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

हल

कंपनी बाग में रखी यह 1857 की तोप निम्नलिखित सीखें देती है —

1. यह बताती है कि बड़ी-से-बड़ी शक्ति भी एक दिन नष्ट हो जाती है — 'कितनी भी बड़ी हो तोप / एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।'
2. यह याद दिलाती है कि ईस्ट इंडिया कंपनी जैसी शक्तियाँ भी अंत में पराजित हुईं।
3. यह सीख देती है कि भारत को भविष्य में सतर्क रहना चाहिए — कोई और 'ईस्ट इंडिया कंपनी' यहाँ पाँव न जमाने पाए जिसके इरादे नेक न हों।
4. यह राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रति सजग रहने का संदेश देती है।
5. साथ ही, यह तोप यह भी बताती है कि हिंसा और दमन अंत में निष्फल होते हैं — गौरैयें जिस पर बैठकर गपशप करती हैं वह तोप कभी भयानक हथियार थी।

उत्तर: कंपनी बाग की तोप यह सीख देती है कि बड़ी-से-बड़ी ताकत भी एक दिन समाप्त हो जाती है। यह भारतीयों को सतर्क करती है कि भविष्य में किसी भी विदेशी शक्ति को गलत इरादों से यहाँ पाँव न जमाने दें, और यह भी कि हिंसा और दमन की शक्ति अंततः निष्फल होती है।

प्रश्न 4

कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

हल

कविता में कहा गया है — 'साल में चमकाई जाती है दो बार।'

ये दो अवसर निम्नलिखित हो सकते हैं —

1. 15 अगस्त — स्वतंत्रता दिवस: यह वह दिन है जब भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली थी। इस दिन तोप को चमकाकर उस संघर्ष की याद दिलाई जाती है।
2. 26 जनवरी — गणतंत्र दिवस: यह वह दिन है जब भारत का संविधान लागू हुआ और भारत पूर्ण गणराज्य बना।

इन दोनों राष्ट्रीय पर्वों पर इस ऐतिहासिक तोप को चमकाना यह संदेश देता है कि हम अपने इतिहास को, अपने पूर्वजों के बलिदान को और उस दासता के प्रतीक को भूले नहीं हैं।

उत्तर: ये दो अवसर हैं — 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) और 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस)। इन दोनों राष्ट्रीय पर्वों पर तोप को चमकाकर उस दासता और संघर्ष की याद दिलाई जाती है तथा पूर्वजों के बलिदान को याद किया जाता है।

प्रश्नावली 5.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — भाव स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

अब तो बहरहाल छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो तो उसके ऊपर बैठकर चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।

हल

प्रसंग — इन पंक्तियों में कवि ने उस तोप की वर्तमान दशा का वर्णन किया है जो कभी बड़ी भयंकर और शक्तिशाली थी।

'फ़ारिग' का अर्थ है — मुक्त / खाली।

भाव — अब इस तोप की शक्ति बिल्कुल नष्ट हो चुकी है। छोटे-छोटे बच्चे इस पर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब बच्चे इस पर सवारी करने से थक जाते हैं (फ़ारिग होते हैं), तब चिड़ियाँ आकर इस पर बैठती हैं और आपस में गपशप करती हैं।

यह व्यंग्य है — जो तोप कभी वीर सेनानियों के 'धज्जे उड़ाती' थी, आज बच्चों के खिलौने और चिड़ियों के बैठने की जगह बन गई है।

कवि का संदेश है कि कोई भी हिंसक शक्ति अंत में तुच्छ हो जाती है — समय सबकी ताकत छीन लेता है।

उत्तर: भाव — जो तोप कभी अत्यंत भयंकर और शक्तिशाली थी, आज वह इतनी निर्बल हो गई है कि छोटे बच्चे उस पर घुड़सवारी करते हैं और चिड़ियाँ उस पर बैठकर गपशप करती हैं। यह व्यंग्यात्मक चित्रण बताता है कि हिंसक शक्ति का अंत तुच्छता में होता है।

प्रश्न 2

वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

हल

प्रसंग — इन पंक्तियों में कवि ने चिड़ियों (गौरैयों) के माध्यम से एक गहरा संदेश दिया है।

तोप के भीतर घुसकर बैठने वाली गौरैयें और अन्य चिड़ियाँ एक सत्य बताती हैं —

भाव — चाहे कोई शक्ति कितनी भी बड़ी और भयंकर हो, एक न एक दिन उसका अंत होना ही है। उसका मुँह बंद हो ही जाता है।

1857 की यह तोप कभी बड़ी शक्तिशाली थी और उसने हजारों भारतीयों को मौत के घाट उतारा था। लेकिन आज उसका मुँह बंद है।

यह पंक्तियाँ सत्य, न्याय और मानवता की विजय का संदेश देती हैं — हिंसा और अत्याचार की शक्ति अमर नहीं होती।

व्यंग्य यह भी है कि इस 'बड़ी जबर' तोप को यह सत्य बताने वाली हैं — छोटी-छोटी गौरैयें।

उत्तर: भाव — चाहे कोई शक्ति कितनी भी विशाल और भयावह क्यों न हो, एक दिन उसका अंत अवश्य होता है। 1857 की यह भयंकर तोप आज मूक और निष्क्रिय है। छोटी चिड़ियाँ इस सत्य की साक्षी हैं — हिंसक शक्ति अजर-अमर नहीं होती।

प्रश्न 3

उड़ा दिए थे मैंने अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।

हल

प्रसंग — ये पंक्तियाँ तोप के 'आत्म-कथन' के रूप में हैं जिसमें वह सैलानियों को अपनी पूर्व शक्ति के बारे में बताती है।

'सूरमा' का अर्थ है — वीर / योद्धा।

'धज्जे उड़ाना' का अर्थ है — चिथड़े-चिथड़े कर देना / पूरी तरह नष्ट कर देना।

भाव — तोप अपने स्वर्णिम (क्रूर) अतीत को याद करते हुए कह रही है कि उसने अपने जमाने में अच्छे-अच्छे वीर सेनानियों को तहस-नहस कर दिया था — उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।

यह 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानियों की ओर संकेत है जिन्हें ब्रिटिश सरकार की इस तोप से निर्ममतापूर्वक मार डाला गया था।

कवि यहाँ तोप को व्यंग्यात्मक रूप से 'बोलते हुए' दिखाकर उसके अत्याचारी इतिहास को उजागर करता है।

उत्तर: भाव — तोप अपने क्रूर अतीत का बखान करती है कि उसने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के वीर सेनानियों को निर्ममता से मार डाला था। 'धज्जे उड़ाना' अर्थात् शरीर को तहस-नहस कर देना। कवि व्यंग्य से तोप की पूर्व भयंकरता और उसके अत्याचारी इतिहास को उजागर करता है।

प्रश्नावली 5.3 — भाषा अध्ययन

प्रश्न 1

कवि ने इस कविता में शब्दों का सटीक प्रयोग किया है। एक पंक्ति देखिए — 'धर रखी गई है यह 1857 की तोप'। 'धर' शब्द का कवि ने कई अर्थों में प्रयोग किया है — 'रखना', 'धरोहर' और 'संचय' के रूप में। इन तीनों अर्थों को उदाहरण सहित समझाइए।

हल

कविता में 'धर' शब्द का प्रयोग बहु-अर्थी रूप में हुआ है —

1. 'रखना' के अर्थ में: तोप को धर (रख) दिया गया है।
2. 'धरोहर' के अर्थ में: यह तोप हमारी धर (धरोहर/विरासत) है।
3. 'संचय/थाती' के अर्थ में: पूर्वजों की यादें इसमें धर (संचित/संरक्षित) हैं।

उत्तर: 'धर' के तीन अर्थ — रखना (तोप को धर दिया गया), धरोहर/विरासत (यह तोप हमारी धरोहर है), और संचय/थाती (यादें इसमें धर/संचित हैं)।

प्रश्न 2

'तोप' शीर्षक कविता का भाव समझते हुए इसका गद्य में रूपांतरण कीजिए।

हल

गद्य रूपांतरण —

कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर 1857 की एक पुरानी तोप रखी हुई है। इस तोप की बड़ी देखभाल होती है — जिस प्रकार विरासत में मिले कंपनी बाग की सँभाल होती है, उसी प्रकार इस तोप को भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

सुबह-शाम कंपनी बाग में अनेक सैलानी (पर्यटक) आते हैं। यह तोप उन्हें बताती है कि मैं अपने जमाने में बड़ी शक्तिशाली थी — मैंने अच्छे-अच्छे वीर सेनानियों के धज्जे (चिथड़े) उड़ा दिए थे।

लेकिन अब यह तोप निष्क्रिय हो चुकी है। छोटे-छोटे बच्चे इस पर घुड़सवारी करते हैं। जब बच्चे इससे ऊब जाते हैं, तो चिड़ियाँ इस पर बैठकर गपशप करती हैं। गौरैयें तो शैतानी में इसके भीतर भी घुस जाती हैं।

ये चिड़ियाँ एक सत्य सिखाती हैं — चाहे तोप कितनी भी बड़ी और भयावह क्यों न हो, एक दिन उसका मुँह अवश्य बंद हो जाता है।

उत्तर: गद्य रूपांतरण: कंपनी बाग के प्रवेश द्वार पर 1857 की एक तोप रखी है जिसे साल में दो बार चमकाया जाता है। यह तोप सैलानियों को बताती है कि वह वीर सेनानियों के धज्जे उड़ाती थी। अब बच्चे इस पर सवारी करते हैं और गौरैयें इसके भीतर बैठती हैं — यह सिखाते हुए कि चाहे तोप कितनी भी बड़ी हो, एक दिन उसका मुँह बंद होना ही है।